धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जून-जुलाई 2008

- मनुष्य में कई प्रकार की सुख प्रियता
- आत्मिक अन्धेरे के भयानक कल
    - श्रेष्ठ होना आत्मीयता का अनुभव करना है।
    - अपने खिलाफ सुनना प्रायः असम्भव
- दृढ़ निश्चय
- अंधविश्वासी हैं महामहिम प्रतिभा पाटिल

सेवक हैं देवगुरु के सेवा किया करेंगे,
नक्शे कदम पै अपने गुरु के चला करेंगे। टेक
सब साथी सेवकों की सोचेंगे हम भलाई;
और उनके हित की दिल से शुभ कामना करेंगे।
हम उच्च मेल की भी राहें निकाल लेंगे,
पत्र लिखा करेंगे जाकर मिला करेंगे।
होगा किसी के हां जब शुभकर कोई अनुष्ठान;
अच्छे दिलों से जाकर शामिल हुआ करेंगे।
पाएंगे साथी सेवक जब हम किसी विपद में;
हितकर सहायता को फौरन बढ़ा करेंगे।
टूटे हुए पुराने सम्बन्ध जोड़ लेंगे;
फटे हुए दिलों को फिर से सिया करेंगे।
सेवक जो देवगुरु से जोड़ेंगे आत्मा को;
लोगों में जो गुरु का प्रचार जा करेंगे।
जो जिन्दगी मिशन में देवात्मा के देंगे,
और उनकी संस्थाएं उन्नत किया करेंगे।
देखेंगे हम उन्हें अत सन्मान की नज़र से;
श्रद्धा से भरके उनके आगे झुका करेंगे।

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 6 – 7

जून – जुलाई 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य में कई प्रकार की सुख प्रियता

जीवन तत्व की ज्योति फैले, जीवन बल चहुं दिग वितरण हो, अधिकारी जन उच्च बनें सब, सत्य धर्म का बोध उत्पन्न हो।

पूजनीय भगवान ने फरमाया -

कल जो कुछ यहां बयान किया था, उसे पहले तरतीबवार दोहरा लेना चाहिये।

चार शब्द याद रखने चाहिये। (1) देवगुरू (2) देव धर्म (3) देवशास्त्र और (4) देव समाज। इन शब्दों से विविध सत्यों का प्रकाश होता है, और इनका परस्पर सम्बन्ध है। देव गुरू से देव धर्म का प्रकाश हुआ है। देव धर्म के प्रकाश से देव शास्त्र का जन्म हुआ। और देवशास्त्र को लेकर देवसमाज है। कल यहां जो ब्यान किया गया था। उसकी चार हिस्सों में तकसीम किया जाता है।

1. मनुष्यात्माओं में अनुचित सुख प्रियता मौजूद है।
2. उनमें अनुचित अपहरण प्रियता भी वर्तमान है।
3. मिथ्या ज्ञान या मिथ्या प्रियता भी उनके भीतर है।
4. मिथ्या लक्ष्य प्रियता उनमें वर्तमान है।

साधारण मनुष्य में ये चार प्रकार की प्रियता पाई जाती है। सुख हर एक को प्यारा है। जो कुछ नागवार मालूम होता है, और जिसका नाम दुःख है वह मनुष्य को नापसन्द है। शुरू से लेकर ही मनुष्य में सुख प्रियता आ जाती है। नाना प्रकार की वासनाएं उसमें पैदा हो जाती है। हर एक बात में वह सुख या दुख महसूस करता है। यह सिलसिला बढ़ता जाता है। मनुष्य में अनुचित सुख का प्यार होने से वह अधोगति की ओर जाना शुरू करता है। और धीरे - धीरे उसका विनाश होना आरम्भ हो जाता है, चाहे वह इस बात को जाने चाहे न जाने। बच्चा चाहे जाने चाहे न जाने कि सर्दी किस बला का नाम है परन्तु यदि उसे सर्दी लग जाये तो हम देखते हैं कि उसे निमोनिया हो जाता है।

मनुष्यों में अनुचित अपहरण प्रियता मौजूद है, घर - घर, नगर - नगर में मनुष्य की इस अवस्था का सबूत मिलता है। गवर्नमैंट किस बात के लिये है? निश्चय ही मनुष्य की कितनी ही अपहरण मूलक गतियों को रोकने के लिये। आजकल जंग में क्या हो रहा है? जर्मनी का बादशाह कैसर कहता था कि ईश्वर का हुक्म है कि जंग हो। इस जंगों में नाना प्रकार की तबाही पैदा हो रही है। मनुष्य - मनुष्य के लिये अपहरणकारी बना हुआ है और नाना अंगों में भारी नुकसान हो रहा है।

क्या दुनियां में मिथ्या ज्ञान और मिथ्या प्रियता मौजूद है? हाँ मौजूद है? लाखों मनुष्य मिथ्या

ज्ञान और मिथ्या विश्वासों के प्रेमक बने हुए हैं। मिथ्या के प्यारे अपनी एक-एक मिथ्या विश्वास को छोड़ना नहीं चाहते चाहे उनका वह मिथ्या विश्वास तजरबे की कसौटी पर उनके सामने कितना ही गलत साबित हो जाये। कोई विश्वास सत्य है या मिथ्या इसको नेचर में उन कसौटियों पर परखने से जो सत्य कसौटियां हैं। और मिथ्या का पता लग सकता है। शोक! आत्मा के सम्बन्ध में मनुष्य को सत्य ज्ञान लाभ करने की कोई आवश्यकता बोध नहीं होती। यह तो है कि यदि कोई आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान देना चाहे और जीवन का सच्चा रास्ता दिखाना चाहे तो लोग उसकी विरोधता करते हैं। उसको डराते हैं और नाना प्रकार के विघ्न बाधाएं पैदा करते हैं। आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान की लाखों मनुष्यों को आवश्यकता नहीं। वह मिथ्या की दुनियां में ही रहना चाहते हैं और उससे निकलना नहीं चाहते। कैसी सोचनीय अवस्था।

यदि मनुष्यों में अपहरण प्रियता न होती तो एक दफा बतलाने से कि अमुक कर्म बुरा है तो वह बुरे काम को छोड़ न देते। परन्तु अपहरण प्रियता के कारण यह जानकर भी अमुक चिन्ता क्रिया बुरी है मनुष्य उसका साथ देता है और उसको छोड़ना नहीं चाहता। बाहर की गवर्नमैंट क्या कर सकती हैं? वह एक एक अपराधी को जेल में बन्द कर सकती है, ताकि उसने दूसरों के सम्बन्ध में जो अपहरणकारी कर्म किया है, उसको वह न कर सके। परन्तु वह जेल से बाहर आकर अनेक बार फिर उन्हीं कर्मों को करता है। हाँ एक-एक बार जेल में बन्द हुआ भी अपहरणकारी कर्म करता देखा जाता है, क्योंकि उसकी वह अपहरण प्रियता की प्रकृति उसके साथ जेल में भी वैसी ही है जैसे कि बाहर थी। आखिर में पूजनीय भगवान ने फरमाया कि मनुष्यों में नीच लक्ष्य मौजूद है।

लक्ष्य किसे कहते हैं? देखो तुम मौत को पसंद नहीं करते। नेचर में परिवर्तन का नियम जारी है। मनुष्य हर घड़ी मौत की तरफ जा रहा है या जिन्दगी की तरफ। तब लक्ष्य क्या है मनुष्य का? वही जिससे मौत से रक्षा हो और जिन्दगी प्राप्त हो। नेचर के नियम अटल हैं। तुम उनको जानो, चाहे न जानो, जिस लक्ष्य से तुम मौत की तरफ जाते हो वह मिथ्या और हानि कारक लक्ष्य है। मिथ्या लक्ष्य के प्यारे बनकर तुम मौत से किसी प्रकार नहीं बच सकते। मिथ्या लक्ष्य की तरफ जाकर शरीर और आत्मा दोनों नष्ट हो जाते हैं। उच्च लक्ष्य गामी आत्मा का आत्मा बेहतर बनता है, नीच लक्ष्य गामी के शरीर और आत्मा दोनों का विनाश होता है। उच्च लक्ष्य वह है जिससे आत्मा मौत से बचता है और जीवन की ओर जाता है।

पूजनीय भगवान ने अपना ब्यान दोहराते हुए फिर फरमाया-

हमने देखा कि मनुष्य में अनुचित सुख प्रियता, अपहरण प्रियता, मिथ्या ज्ञान या विश्वास प्रियता और मिथ्या लक्ष्य प्रियता मौजूद है। उसके इन चारों प्रेमों में जो दखल देता है, उसको मनुष्य घृणा करता है। देवात्मा मनुष्य को इन चारों अनुचित प्रेमों से निकालना चाहते हैं। इसलिये साधारणता: मनुष्य देवात्मा को घृणा करता है। देवात्मा उसको अच्छे नहीं लगते। यदि किसी में उच्च परिवर्तन आ गया है तो वह उसकी अपनी इच्छा से नहीं आया है। उसके आत्मा पर नेचर का कोई अटल नियम पूरा हुआ है। देवात्मा के देव प्रभाव उस तक पहुंच गये हैं और उसका उसकी योग्यतानुसार भला हो गया है। लाखों जनों की ओर से विरोधता के होने के बावजूद भी देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा एक-एक अधिकारी मनुष्य में उच्च परिवर्तन आया है। उसकी मौत से रक्षा हुई है। वह जिन्दगी की तरफ गया है। उसमें मौत से बचने और जिन्दगी की तरफ जाने की आकांक्षा पैदा हुई है। यह सब देवात्मा के देव प्रभावों की बदौलत है। लोगों ने तो फतबा दे दिया था कि देवात्मा का मिशन

गारत होने के लिये है। लेकिन उनका यह फतवा गलत साबित हुआ है वक्त के साथ देवात्मा का मिशन फलने-फूलने के लिये है।

दिल के दरवाजे खोल दो, देव प्रभावों को अन्दर घुसने दो :-

आवश्यकता है कि तुम लोगों में ऐसा सत्य और उच्च विश्वास पैदा हो, और वह धीरे-धीरे बढ़े। तुम उच्च लक्ष्य को अपनाओ, तब जहाँ तक तुम्हारा बचना सम्भव है, वहां तक तुम बच जाओगे। तुम्हारे अन्दर पूर्वजों से जो अच्छी पूंजी विरासत में मिली है, तुम उसको यूं ही नष्ट मत करो। केवल धन कमाने में अपनी शक्तियां मत लगाओ। देवात्मा के मिशन के पुरजे बनों। मैं उपरोक्त प्रकार के चारों नीच प्रेमों को नष्ट करने और उनकी जगह नयी ताकतें पैदा करने के लिये आया हूँ, जिससे मुल्क और कौम बेहतर बनें। तुम्हारे इन चारों प्रेमों में से यदि कोई प्रेम घटता है, तो तुमको घबराना नहीं चाहिए। तुम्हें तैयार रहना चाहिए इन प्रेमों को घटाने के लिए। अपने दिल के दरवाजों को बन्द न रखो। देवात्मा के देव प्रभावों को अन्दर घुसने के लिए अपने दिल के दरवाजे खोल दो। तुम उनको बन्द रख सकते हो, परन्तु उसके फल से नहीं बच सकते। परिवर्तन का जो नियम है उसके पूरा करने से ही परिवर्तन आयेगा।

मेरी यह कामना है कि किसी तरह तुम्हारी इन चारों बातों में फतूर आ जावे, वह घट जावें, तब समझना चाहिये कि मैंने जो तुम पर मनुष्य तत्व प्रकट किया है उसका कुछ फल हुआ और मेरा संग्राम सफल हुआ।

12 - 10 - 15

अपने आप को जानो :

जीवन तत्व की ज्योती फैले.....

नेचर या प्रकृति के महान कार्य में मनुष्य का प्रकाश एक विचित्र करिश्मा है। नेचर क्या है? जो कुछ, और जहां है, उस सब के समूह का नाम नेचर है। नेचर में प्रति महुर्त परिवर्तन जारी है। एक समय था जब कि हमारी पृथ्वी नहीं थी। परिवर्तन के सिलसिले में हमारी पृथ्वी जाहिर हुई। पहले इस पर कोई जानदार नहीं थे। फिर समय के साथ अनुकूल हालात के आने पर उस पर जानदार पैदा हुए। पशु जगत के विकास क्रम में मनुष्य आया। लाखों वर्षों के संग्राम और परिश्रम का फल होने के कारण मनुष्य का आविर्भाव इस पृथ्वी पर विशेष है। मनुष्य को ही यह अधिकार मिला है कि वह सत्य ज्ञान लाभ करे, मनुष्य को ही सत्य वेता होने की आवश्यकता है। मनुष्य होकर अपने शरीर से ऊपर आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान और सत्य बोध प्राप्त न करना उस की बहुत कृपा पात्र अवस्था है। किसी ने कहा है-

क्यों कर कहूँ आरफे खुदा हूँ,
आगाह नहीं कि आप क्या हूँ।

(अर्थात् मैं क्यों कर कहूँ कि मैं खुदा को जानता हूँ, जब कि सच तो यह है कि मैं अपने आप को नहीं जानता) ईश्वर की हस्ती तो मिथ्या है। उस को मनुष्य क्या जानेगा, हां अपने आप का ज्ञान पाना उसके लिए परमावश्यक है। पूज्यनीय भगवान ने मिस्टर परमा नन्द एम. ए. की मिसाल दी कि वह एम. ए. हो कर अपने आप के विषय में कैसी पागलों जैसी बातें करते हैं। मनुष्य की हस्ती में उस का शरीर और उस का आत्मा यह दो चीजें हैं। मनुष्य की गठन प्राप्त जीवनी शक्ति को उस का आत्मा कहते हैं। प्रत्येक मनुष्य और उस के भिन्न प्रत्येक जीवित अस्तित्व के भीतर की मूल शक्ति (जो अपने विषय में अज्ञानी रह कर भी) अपने जीवित शरीर के निर्माण, रचना, पालन और संशोधन करके उसे जीवित रखने और अपने आप जीवित रहने की चेष्टा करती है, जीवनी शक्ति कहलाती है। जीवनी शक्ति का खासा ही यही है कि जो ऊपर बताया गया है। हम क्यों कर

जानें की किसी अस्तित्व में जीवनी शक्ति है या नहीं। वह देखो सामने गुलाब का पौधा है वह जीवित पौधा है। उसकी एक शाखा काट लो उस में तुम जीवनी शक्ति पाओगे। हमारा दावा है जीवित गुलाब के पौधे में जीवनी शक्ति है जिस ने उस पौधे की रचना की है। इस पौधे की एक विशेष कलम को एक और जगह गाड़ कर उस में पानी देते हैं। हम देखेंगे कि अनुकूल हालत के मिलने पर उस कलम में से शाखाएं फूटने लगी थी। पत्ते निकलने आरम्भ होंगे, और आखिर वह एक बड़ा पौधा बन जाएगा और उसमें से फूल निकलने लगेंगे। प्रश्न हो सकता है। शाख की जीवनी शक्ति ने नहीं बल्कि किसी और चीज़ ने (ईश्वर या खुदा ने) गुलाब के पौधे की रचना कर दी है। तर्जुबे से इस बात की पड़ताल की जा सकती है। जीवनी शक्ति को नष्ट कर दो और बाकी सब चीजें रखो फिर देखो कि पौधा बनता है या नहीं। जीवनी शक्ति को निकाल दो, तो पौधा नहीं बनेगा, इसलिए कलम के भीतर की जीवनी शक्ति ने ही अपनी योग्यता और, अनुकूल हालाम में गुलाब के पौधे का निर्माण किया है, इसके मनुष्य के अस्तित्व में यही जीवनी शक्ति विवेक और भावों को प्राप्त होकर उसकी आत्मा मनुष्य के अस्तित्व में यही जीवनी शक्ति विवेक और भावों को प्राप्त होकर उसकी आत्मा कहलाती है।

अपनी कमजोरियों से रू-ब-रू हों

अपनी कमजोरियों को जानना जिंदगी को खुशगवार और सरल बनाने का जरिया है।

वह मुझसे अनुरोध कर रहा था कि उसका ट्रांसफर किसी दूसरी जगह कर दिया जाए, क्योंकि दफ्तर में उसकी किसी से पट नहीं रही है। मैंने उसके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। अभी एक साल होने में कुछ दिन बचे थे कि वह फिर से उसी अनुरोध के साथ मेरे सामने उपस्थित था। मैंने इस बार भी उसकी बात मान ली। लेकिन जब वह तीसरी बार इसी उद्देश्य से आया, तो मैंने न केवल उसके अनुरोध को ठुकरा दिया, बल्कि उसे डांट भी लगाई। असल में उसकी असली समस्या यह थी कि वह दूसरों को अपनी समस्या का कारण समझता था। जबकि सच्चाई यह थी कि वह खुद में ही एक समस्या था।

प्राचीन यूनान में जितने भी नाटक लिखे गए। ज्यादातर त्रासद नाटक थे। उनका समापन दुख में होता है, असफलताओं में होता है। भले ही हम उसके नायक के इस दुख और असफलता के लिए भाग्य के लिए समाज को, मित्रों को या फिर अन्य किसी को भी जिम्मेवार ठहराएं, लेकिन सच्चाई यही रहती है कि उस दुख और असफलता के कारण उस नायक के अपने व्यक्तित्व और चरित्र में ही निहित रहते हैं। जिस दिन भी जिंदगी का यह सरल, सीधा और सच्चा फलसफा समझ में आ जाता है, उसी से जिंदगी में एक क्रांतिकारी बदलाव की शुरूआत हो जाती है। वैसे नियम भी यही है कि जब हम दूसरों पर दोष लगाने के लिए अपनी तर्जनी को उसकी ओर उठाते हैं, तो नीचे की उंगुली अपनेआप हमारे सीने की ओर उठ जाती है। दुर्भाग्य यह है कि नीचे रहने के कारण हम उसे देख नहीं पाते। यदि बिल्ली अपनी आँखें बंद करके दूध पीने लगे, तो लोग उसे दूध पीते हुए नहीं देख सकेंगे? सच कड़वा होता है, लेकिन उसे जान लेने के बाद सच मीठा बन जाता है। अपनी कमजोरियों को जानना, सच को जानकर अपनी जिन्दगी को खुशगवार और सफल बनाना है।

आत्मिक अन्धोरे के भयानक कल

भगवान् देवात्मा के आविर्भाव से पहले सारा मनुष्य मात्र देव ज्योति से खाली था। देव ज्योति ही एक ऐसी ज्योति है, जिस में आत्मा का रूप नज़र आता है। उस का रोग और पतन दिखाई देता है। उस के सत्य मोक्ष और उच्च विकास के नियमों का ज्ञान मिलता है। इस ज्योति को पाकर ही सत्य मोक्ष और उच्च विकास की सत्य विधि अधिकारी आत्माओं को नजर आती है। अर्थात् आत्मा के रूप और उस के जीवन और मृत्यु की लीला इसी ज्योति में प्रगट होती है। अब जब सारा मनुष्य जगत इस देव ज्योति से खाली था तब कहां सम्भव था, कि योग्यता रखने पर भी कोई अन्धकार से निकल सके।

जब सारा मनुष्य मात्र आत्म अन्धकार में पड़ा हुआ था, तब यह अनिवार्य था, कि मनुष्य सम्बन्ध तत्व से गाफिल रहे। अधिकार तत्व से अज्ञानी रहे। आत्मिक विनाश और विकास के तत्वों से विमुख रहे। उस का फल यह हुआ है, कि मनुष्य नाना सम्बन्धों में बहुत गलत जाता है, और विनाशकारी गतियाँ करके यह बोध नहीं कर सकता, कि मैं विनाश की तरफ जा रहा हूँ। मिथ्या विश्वासों के अधीन हो कर यह गलत शिक्षा ग्रहण करके बैठा हुआ है कि नीच चिन्ताओं और नीच क्रियाओं का आत्मिक जीवन पर कोई असर नहीं होता है। पापी से पापी होकर, हत्यारे से हत्यारा होकर महा पिशाचाना क्रियाएं करके भी अपने आप को बेगुनाह और बेहतर मनुष्य अनुभव करता है।

इतिहास में कई ऐसी घटनाओं का वर्णन है, कि जिस में एक-एक जन ने अपने आपको ठीक-ठीक समझ कर क्रियाएं की हैं, और उन क्रियाओं का फल महा भयानक हुआ है, आने वाली नसलों ने तो ऐसे वजूदों पर फिटकार डाली है, परन्तु जो हानि हो चुकी उस का भयानक असर आने वाली नसलों को भुगतना पड़ा।

रागोया नामी एक पेशवा हो गुजरा है, इस जन का भतीजा माधो राय था। माधो राय एक असाधारण पुरुष था। मराठों के अभाग्य कि वह जवानी में गुजर गया। उस ने रगोया को बुलाकर अपने छोटे भाई नारायण का हाथ पकड़ा, और यह कहा कि तुम ने इस की रक्षा करना। रागोया ने वायदा कर लिया परन्तु अफसोस है, कि उस के मन में यह मिथ्या भाव उत्पन्न हो गया, कि भतीजा मेरा नालायक है, अगर इस को गद्दी पर बिठाऊँगा, तो मराठों का नाश हो जाएगा। इस बुरे ख्याल को उस ने अच्छा ख्याल समझा। नारायण राय छोटा था, और इसलिए बेबस था। रागोया ने उस को किसी न किसी तरीके से मरवा दिया। यह महा पाप करके वह तख्त पर बैठने का हकदार हो गया। किसी-किसी पापी को इस पृथ्वी पर ही सजा मिल जाती है। इतफाक ऐसा हुआ, कि माधोराय की पत्नी जो गर्भवती थी, उस के घर लड़का उत्पन्न हो गया, इसलिए गद्दी का मालिक आ गया। बहुत सारे मराठे इस बच्चे के हक में खड़े हो गए। इस पर झगड़ा आरम्भ हो गया। अच्छा तो यह होता, कि रागोया हकदारों का हक मान लेता, उस ने तो शरारती आदमियों के साथ मिलकर और बहुत बड़ा प्रचार करके

हकदारी से गद्दी छीननी चाही और अपने भतीजे नारायण रायको कतल करके गद्दी भी ले ली थी, परन्तु माधोराय के बच्चे के पैदा होने से इसकी साजिश फल न सकी। फिर भी रागोया पर जो भूत सवार था, उस से परिचालत होकर वह अंग्रेजों के पास पहुँचा, उनकी मदद चाही और मांगी। उस का ही यह फल हुआ, कि आखिरकार मराठों का राज्य मराठों के हाथों से छीना गया, और एक पिशाच आत्मा के बुरे भाव से एक सारी कौम का राज्य छीना गया।

रागोया अपने आप को ठीक ठाक समझता था, और अपने आपको अपनी कौम का हितकारी समझता था। आत्म अन्धकार के कारण अपना रूप देख नहीं सकता था, इसलिए उल्टा दृष्टा होकर ऐसी क्रियाएं करने लगा जिस से उन की अपनी प्यारी कौम का राज्य सदा के लिए छीना गया।

इसी प्रकार मुगल राज्य का हाल हुआ। एक धर्म का दीवाना जिस का नाम औरगज़ेब था, कहा जाता है, कि धर्म का ऐसा पक्का था, कि कुरान शरीफ की नकल करके और उसे बेच कर और ऐसे ही अन्य त्याग करके अपना गुज़ारा करता था। अपने मत के अनुसार धर्मवान जन था। यह इसलाम को अपनी जान प्राण अनुभव करता था। अपने मजहब की वृद्धि की खातिर वह हिन्दुओं को सताता था। उस ने हिन्दुओं के मन्दिर ढाए, हिन्दु मन्दिरों में हिन्दु शिक्षा का प्रचार बन्द किया। उस ने नए सिरे से हिन्दुओं पर ताबान डाला, जिस का नाम जज़िया है। उस ने मराठों को सताया, उस ने ही गुरू तेगबहादुर जी को मरवाया। यह सब कुछ जो उस ने किया, वह अपने ख्याल के अनुसार सरलता और नेकी के भावों से भरकर किया, परन्तु नेचर में यह सवाल ही नहीं, कि किसी ने सरलता से किसी को संखिया दे दिया, संखिया इसलिए अपना असर नहीं छोडेगा, कि संखिया देने वाला अजानी था, या सरल था, या उसकी नियत ठीक थी। औरग़जेब ने जो कर्म किए, वह बहुत अन्यायकारी थे। यह सच है, कि कपटी से सरल आदमी लाखों गुणा बेहतर है, परन्तु वह आत्मिक जगत में अपने मत, समाज या धर्म में जो जन झूठ का व्यवहार दिल खोल कर करते हैं, उन से सत्य भाषण करने वाले लाखों और करोड़ों दरजा बेहतर हैं। अफसोस औरंगजेब जहां मुतास्सब था, वहां आत्म अन्धकार का भी पुतला था। इसलिए जहां हिन्दुओं के सम्बन्ध में उसकी क्रियाएं बहुत अन्यायकारी थी, वहां प्रसद भावों का पोषण करते-करते वह इस कदर सख्त दिल और उल्टा दृष्टा हो गया था, कि वह किसी पर भरोसा नहीं करता था। हिन्दु तो उस के दुश्मन ही हो गए, परन्तु उस के निकट के मुसलमान भी उस के विरोधी बन गए।

ज्यों ही औरंगजेब गुजर गया, त्यों ही उस का शानदार राज्य टुकड़े-टुकड़े होने लगा। इस के अपने गवर्नर ही जगह-जगह खुद मुखतार हो गए। मराठों ने तो मुगल बादशाहित को वह हानि पहुँचाई, जिस से वह कभी उठ न सकी।

अब औरंगजेब इसलाम के इतिहास में एक महा पुरूष गिना जाता है, पक्का नमाजी था, कुरान शरीफ का पाठ करता था, गैर मामूली त्यागी था, परन्तु महा मुतास्सब, महा कठोर और महा अन्यायकारी था। उस के पाठ और पूजा ने मुगल बादशाहित को नहीं बचाया। उस के असाधारण त्याग ने मुगल राज्य को नहीं बचाया, उसका असद् भाव, मुतास्सब अवस्था और हिन्दु जाति पर अन्याय ने इस हिमालय पर्वत जैसे

राज्य को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

भगवान देवात्मा ने जिन गैर मामूली सचाइयों का वर्णन किया है, उन में से एक सचाई यह है, कि पूर्ण न्याय और परोपकार के भावों से परिचालित होकर ही हम अपनी समाज, जाति और वंश की रक्षा कर सकते हैं। हमारा त्याग हमारी और दूसरों की नज़र में कैसा ही अच्छा हो, वह त्याग जब न्याय और परोपकार के भावों के लिए, नहीं किया जाएगा तब वह त्याग क्या हमारे लिए क्या हमारी समाज और जाति के लिए महा भयानक साबित होगा। रागोया ने यह नहीं चाहा था, कि मराठों का राज्य नष्ट हो जाए। औरगज़ेब ने यह नहीं चाहा था, कि मुगल राज्य नष्ट हो जाए। परन्तु आत्म अन्धकार के वश होकर और लालच और पक्षपात के भावों से परिचालित होकर उन्होंने अपनी जाति का सारा राज्य नष्ट कर दिया, जो राज्य उन को फिर कभी नहीं मिला।

अपने अन्दर छिपी ताकत को पहचानें

नेतृत्व करने वाला अपने को असुरक्षित महसूस नहीं करता। गुरू का भी यही गुण है। वह विकास में मदद करता है।

मनुष्य जन्म लेने के साथ ही रिश्तों के बंधन में बंध जाता है। उसी परिवेश में बंधु-बांधव, इष्ट मित्र तथा पूरा परिवार उससे जुड़ जाता है। उस नियति के जुड़ाव को स्वीकार कर वह सहयोग, सहायता एवं अपनापन ढूंढता हुआ सदा के लिए निश्चिंत हो जाना चाहता है। उसे हमेशा इंतजार रहता है कि मेरे रिश्तेदार मुझसे दो मीठे बोल बोलकर मुझे अतृप्त आनंद की अनुभूति करवाएं। इससे मेरा मन प्रसन्न हो जाएगा, मगर जब उनकी बेरुखी, परायापन देखा जाता है और सोच से उल्ट देखने को मिलता है तब मन में ऐसी गहरी पीड़ा जन्म लेती है, जो आगे जाकर कुंठा व तनाव बन जाती है। वह निराश मन से इस प्रकार आहत व निर्बल कर देती है। जिससे व्यक्ति कुछ भी करने व सोचने के काबिल नहीं रहता। इसलिए जरूरत है अपने आपको तटस्थ रखने तथा यथार्थ में जीने की।

किसी की थोड़ी सी प्रशंसा में फूल जाना और अलोचना में उदास या दुखी हो जाना। यह निर्बल मन के विकार हैं। जो व्यक्ति छोटी-मोटी बातों में या छोटे-मोटे कार्य संपादन में औरों का मुहताज बनकर जीवन जीता है या किसी के भरोसे रहकर स्वयं से टूट जाता है या फिर प्रत्येक कार्य संपादन में औरों की प्रतीक्षा में बैठा रहता है वह कुछ भी नहीं कर सकता। अपनी प्रतिभा को विकसित नहीं कर सकता। स्वयं की क्षमताएं उस तनाव व असंतुलन में ही खो देता है। फिर तो वह शिशु की भांति मां की गोद से उतरकर बिना संघर्ष हरियाली ही हरियाली चाहता है। मगर हरियाली मिलती नहीं। इस धरती पर कई लोग ऐसे भी होते है, जिनको किसी का भी सहारा नहीं मिलता। परिवार का समस्त दायित्व खुद पर आ जाता है। ऐसी परिस्थिति ही आदमी की कसौटी होती है और इंसान के धैर्य की परीक्षा होती है, मगर मजबूत मनोबल वाले लोग अपना रास्ता हर संभव तरीके से ढूंढ ही लेते है।

श्रेष्ठ होना आत्मीयता का अनुभव करना है।

श्रेष्ठ होने के लिए पहला पग यह है कि हम दूसरों के साथ सम्बन्धित होने का अनुभव करें, और दूसरा यह कि इस सम्बन्ध में हम आत्मीयता के भाव को अनुभव करें।

परन्तु दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध को अनुभव करने का क्या अभिप्राय है? आओ, इस पर तनिक और विचार करें। एकात्मता के नियम के अनुसार कोई सम्बन्ध बोध नहीं है किन्तु कोई भी वस्तु अपने में वही है जो उसका अपना अस्तित्व है। यही एकात्मता का नियम वेदान्त सूत्र के इस वचन के अनुसार है कि "तत्त्वम् असि" तू वही है, आत्मा ब्रहम का अंश है, बिना किसी दूसरे के सब एक ही हैं और वह एक बिना किसी अन्य के क्या हैं? इस प्रकार अन्तरभेद अथवा विभिन्नता इसमें लुप्त है। यह शुद्ध चेतना है, अनन्त चेतना है। वेदान्त का एक्यवाद वास्तव में पूर्ण रूप से एक ब्रह्मम की उपस्थिति किसी प्रकार के सम्बन्ध को अस्वीकार करती है। सम्बन्ध की वास्तविक स्थिति को स्वीकार करना बहुवाद को स्वीकार करना है, क्योंकि सम्बन्ध के लिए कम से कम दो का होना आवश्यक है।

विविध अस्तित्वों के साथ सम्बन्ध बोध करना इस तथ्य को अस्वीकार करता है कि मेरी हस्ती मिथ्या, है अज्ञानता पर आधारित है और केवल एक मात्र ब्रहम सत्य है।

इस बोध के पैदा करने की आवश्यकता है कि सम्बन्धों की वास्तविकता को अस्वीकार करना विचार की एक बहुत बड़ी त्रासदी है। मैं अन्य अनुभूति केन्द्रों से विभिन्न अनुभूति का केन्द्र हूँ क्योंकि सब प्राणियों का एक समान अनुभूति केन्द्र नहीं है। अत: दूसरे के बिना एक चेतना हो ही नहीं सकती। सम्बन्धित अनुभव करने का अर्थ है, इस असत्य विश्वास को समाप्त करना कि सब कुछ एक ही चेतना है। सब कुछ एक नहीं है, अनन्त है और मेरा अस्तित्व उन बहुतों में से एक है। मैं बहुतों से सम्बन्धित हूँ। मेरा उन अनेकों के साथ जो आदान प्रदान है, प्रतिक्रिया है, उसके फलस्वरूप मेरा अस्तित्व है। अत: मेरा अन्यों के साथ सम्बन्ध होना मेरी हस्ती की अनिवार्य और अकाट्य शर्त है।

हमें यह गलती नहीं करनी चाहिए कि सम्बन्ध बोध का अर्थ यह समझें कि मनुष्यात्मा परमात्मा के साथ भक्ति प्रेम बढ़ाए और इसी को एक मात्र सच्चा सम्बन्ध महसूस करे और अन्य सब प्रकार के सम्बन्धों का तिरस्कार कर के उन्हें अस्वीकार कर दे, जैसे माता - पिता के साथ सम्बन्ध, भाई और बहन के साथ, पड़ोसी के साथ व अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध को मिथ्या माने। यदि ईश्वर है और हम ईश्वर के साथ जो अपना सम्बन्ध मानते हैं, यह कैसे हो सकता है कि हम माता - पिता व अन्य अस्तित्वों के साथ अपने सम्बन्ध को मिथ्या मानें। श्रवण कुमार की अपने माता - पिता के प्रति भक्ति मिथ्या कैसे हो सकती है? किस विचार से यह मिथ्या है? यह दो रूपों में मिथ्या समझी जा सकती है। एक यह कि हम मानें कि हमारी हस्ती माता पिता द्वारा नहीं बल्कि परमात्मा द्वारा है, दूसरे अपने अन्य प्राणियों के प्रति यह सम्बन्ध हमें निम्न स्तर पर ले आता है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि मेरा जन्म

मेरे माता - पिता के कारण नहीं अपितु परमात्मा के कारण है। मेरा शरीर तो माता पिता की देन है परन्तु मेरे आत्मा का जन्मदाता परमात्मा है। जब यह मान लिया कि मेरा शरीर माता पिता की देन है तो इसका अर्थ यह हुआ कि मेरा पैदायश (उत्पत्ति) विषयक सम्बन्ध तो माता - पिता से है परन्तु मेरे आत्मा के पैदा करने में परमात्मा का हाथ है।

कुछ भी हो, जीव विज्ञान इस झूठे विश्वास को समाप्त कर देता है कि हमारे अस्तित्व के प्रारम्भ में दोहरापन है। आत्मा की गठन के अंग अर्थात् इसकी बुद्धि, योग्यता, प्रवृत्ति, भावनात्मक और सामाजिक क्षमता ये सब हमारे अपने माता - पिता और पूर्वजों की देन हैं। वह आत्मा जिसको हम प्रतिदिन के जीवन में जानते हैं, वह आत्मा जिससे भक्त अपने भगवान के प्रति श्रद्धा व प्रेम प्रकट करता है और संसार को मिथ्या कहता है, वह अपने अंग प्रत्यंग में हमारी पैतृक देन है और हमारे चारों और वातावरण का प्रभाव मात्र है जो कि भौतिक और सामाजिक दोनों हैं, जिससे कि इस आत्मा का पालन पोषण होता है। मेरे अस्तित्व की उत्पत्ति अर्थात् शरीर और आत्मा दोनों के जन्म का माता - पिता के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं है। ऐसा विश्वास कि मेरे जीवन का प्रारम्भ माता पिता से भिन्न किसी अन्य शक्ति के द्वारा है, यह पूर्णत: असत्य है। यह तो माता - पिता पर निर्भर है कि हमें सन्तान चाहिए या नहीं। इस स्पष्ट और खुले तथ्य से हम अपनी आँखें कैसे बन्द कर सकते हैं? अपने जन्म के लिए माता - पिता के तथ्य के बारे में जिसकी सत्यता की जाँच करना सम्भव है, हम कैसे संशकित हो सकते हैं और ईश्वर के कर्त्ता रूप को जिसकी कि जाँच करना सम्भव नहीं है, उसे कैसे सत्य स्वीकार कर सकते हैं? सृष्टि की रचना का सिद्धान्त बौद्धिक दृष्टि से समझ में आने वाला नहीं है। अपितु नैतिक दृष्टि से भी यह एक अश्लीलवाद है क्योंकि इसे स्वीकार करने पर मेरी माता पिता के प्रति श्रद्धा समाप्त हो जाती है जिनके कारण मुझे यह आत्मा और शरीर प्राप्त हुआ है। मेरे नैतिक व्यक्तित्व पर यह एक असत्य धारणा की स्थापना करता है क्योंकि इससे मैं अपने माता - पिता का यह विशेषाधिकार कि उन्हें मुझे जन्म दिया है, समाप्त कर देता हूँ। मुझे मानव जन्म की प्राप्ति उन्हीं के कारण हुई है।

जो कुछ माता पिता के सम्बन्ध में सत्य है, वह दूसरे अस्तित्वों के सम्बन्ध में वैसा ही सत्य है। विकास का विराट और विशाल प्रमाण इस अनुमानित विश्वास का खण्डन करता है कि इस ईश्वर ने वनस्पति जगत, पशु जगत को मनुष्य की सेवा के लिए निर्मित किया है। जड़ और शक्ति का अनादि व अविनाशी होना इस विचार को कि प्राकृतिक जगत की शून्य से रचना हुई है, मिथ्या और मूर्खता पूर्ण सिद्ध करता है।

जब हम पर यह सच्चाई प्रकट हो जाती है कि हमारा शरीर और हमारा आत्मा दोनों नेचर के हालात की उपज हैं और हम अपनी उत्पत्ति, विकास और निरन्तरता के लिए नेचर पर निर्भर करते हैं तो हम अपने नैतिक जीवन का प्रथम पग उठाने के योग्य हो जाते हैं। और हमारे सम्बन्धों की जड़ जहाँ है उसको पहचानने की क्षमता प्राप्त करते हैं। यदि हम इस अनिश्चित और संदिग्ध अंधकार में लिप्त रहते हैं कि हमारी रचना ईश्वर ने की है तो हम अपने ऊपर छोटे और बड़े उपकारियों की विविधता पूर्ण और भरपूर महान सुन्दर छवि के दर्शन करने से वंचित हो जाते हैं जिन्होंने हमारे हित के लिए योगदान किया है।

आओ, अब हम दूसरी भावना पर आते हैं जिसके कारण ईश्वर को छोड़कर अन्य सबके साथ हम अपने सम्बन्ध को मिथ्या मानते हैं। ऐसा विचार किया जाता है कि परमात्मा का सम्बन्ध हमें उच्चता प्रदान करता है, हमें पवित्र करता है और मोक्ष के मार्ग को हमारे लिए प्रस्तुत करता है। अन्य सबके साथ सम्बन्ध हमें बन्धनों में डालता है और हमारे मोक्ष व मुक्ति के मार्ग को अवरुद्ध करता है। यहाँ हमें यह विचार करना चाहिए कि हमारा सम्बन्ध आखिर किससे है और इससे भी अधिक विचारणीय यह है कि हमारा यह सम्बन्ध कैसा है? एक सर्व साधारण व्यक्ति का सम्बन्ध ईश्वर के साथ स्वार्थ का सम्बन्ध है। अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए ईश्वर को स्मरण किया जाता है। ऐसी अवस्था में यह ईश्वर के साथ हमारा स्वार्थ मूलक सम्बन्ध हमें किस प्रकार उच्चता प्रदान कर सकता है या प्रेरणा प्रदान कर सकता है? यह हमारे संसार के साथ बन्धन को कम करने में हमारी क्या सहायता कर सकता है? जब ईश्वर के साथ सम्बन्ध का स्तर विशुद्ध प्रेम और भक्ति का है यह सम्बन्ध हमें उच्चता प्रदान करता है और हमारी आत्मा को पवित्र करता है, किन्तु आत्मा की उच्चता ईश्वर की मौजूदगी के बिना भी हो सकती है, अपने कर्त्तव्य की पूर्ति निस्वार्थ भावना से करें और निष्काम कर्म द्वारा अन्य व्यक्यिों से सम्बन्ध रखें तो यह कहा जाता है कि इस से मोक्ष की प्राप्ति होती है। अत: मोक्ष तो ईश्वर के बिना अन्य प्राणियों के द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है। श्री राम चन्द्र जी का जीवन अपने माता पिता के प्रति भक्ति और प्रेम का उदाहरण है जिसके कारण उन्होंने राज्य के सुखों का, अपने पिता के वचन को पूर्ण करने के लिए त्याग कर दिया। उन्होंने वन के कठोर जीवन को व्यतीत करना स्वीकार किया। उनका जीवन इसीलिए ऐसे परमहंस से कम नहीं है जो निरन्तर समाधि की अवस्था में रहते हैं।

हमारा सम्बन्ध अन्य सब अस्तित्वों से किसी भी अवस्था में मिथ्या नहीं है। यह सम्बन्ध सत्य है और श्रेष्ठ है। अत: सम्बन्धित अनुभव करना अनेक वाद को स्वीकार करना है और अनेकों से अपने सम्बन्ध को भी मानना है। ऐसी चीजें हजारों हैं जो हमारे अस्तित्व को छूती हैं। जो भी हमें छूता है, उसके साथ हमारा कोई न कोई सम्बन्ध है चाहे उसका नतीजा अच्छा हो या बुरा।

(चलता)

जूते

जब एक दिन महात्मा गांधी एक ट्रेन में चढ़ रहे थे, तो उनका एक जूता निकलकर पटरी पर गिर गया। ट्रेन चलने लगी थी, इसलिए वे उस जूते को उठा नहीं सकते थे। गांधी जी ने शांति से अपना दूसरा जूता उतारा और उसे भी पहले वाले जूते के पास ही पटरी पर फेंक दिया। यह देखकर बाकी यात्री हैरान रह गए। उनके एक साथी यात्री ने जब उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया, तो गांधी जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'जिस भी गरीब आदमी को वह जूता पटरी पर पड़ा मिलेगा, अब उसे इस्तेमाल करने के लिए पूरी जोड़ी तो मिल जाएगी।'

अपने खिलाफ सुनना प्रायः असम्भव

अपने एक लेख में भगवान् देवात्मा फरमाते है :- "तुम्हारी कोई नीच - गति जब तक तुम्हें सुखप्रद अनुभव होती है और तुम सुखार्थी होकर उसे प्यार करते हो, और वह तुम्हें प्रिय अनुभव होती है, और जो देवात्मा उसे घृणा करते हैं और उसके विनाशकारी फलों से तुम्हारे आत्मा की रक्षा करने के निमित उसे अपनी ज्योति के द्वारा तुम्हें बुरे रूप में दिखाना चाहते हैं, उनकी ऐसी क्रिया से तुम अपने उस अनुचित सुख की लालसा पर चोट खाकर उसके प्रति घृणा अनुभव करने के स्थान में उन्हीं देवात्मा को ही घृणा करने लगते हो और अपनी उस सुख लालसा के विरूद्ध कुछ सुनना व देखना पसंद नहीं करते। ऐसे सुखार्थी व सुख के दास होकर तुम उनके प्रति अपने पहले श्रद्धा - भाव को भी स्थिर नहीं रख सकते, वह घटता है व पूर्णतः नष्ट हो जाता है और तुम्हें उनका मामूली श्रद्धालु भी नहीं रहने देता।"

एक बार श्री देवगुरु भगवान् ने बड़े दुखी होकर **"मेरे धर्म - सम्बन्धियों की अवस्था"** शीर्षक एक लेख लिखकर छापा। उस लेख को पढ़कर श्रीमान् देवत्व सिंह जी ने लिखा "मुझ महा - मलीन हृदय रखने वाले महा - दुष्ट ने उस लेख में से उनकी नीच - गति - प्रदर्शक और विकास - नाशक - ज्योति और शक्ति लाभ करने और अपनी मैली अवस्था की घृणा करने के स्थान में उस लेख को ही घृणा करना शुरू किया, क्योंकि उस लेख में मेरी और मेरे एक साथी - कर्मचारी की कई नीच क्रियाओं का जिकर था। हम दोनों ने भगवान् के सम्बन्ध में घृणा - वर्द्धक बात - चीत करके एक दूसरे के भीतर ज़हर भरने का काम किया। पहले तो हमने उस लेख के लिखे जाने को ही फजूल और गैर जरूरी करार दिया। और फिर कहा कि ऐसा लेख छापकर लोगों में फैलाना उन पर कुछ अच्छे असर नहीं डालता। इससे तो लोगों की श्रद्धा घट जायेगी। मेरे भीतर उस लेख के लिए इतनी घृणा महसूस हुई, कि मैंने उसे उठाकर ऐसी जगह फैंका कि जिस जगह जहां तक हो सके, मेरी उस पर कभी निगाह ही न पड़ सके। अपने आत्मा के लिए विनाशकारी यह सब गतियां करके मुझे कोई पता नहीं लगा कि ऐसी गतियाँ मेरे लिए निहायत शर्मनाक, महा हानिकारक और मेरे आत्मा के लिए मृत्यु लाने वाली है। निश्चय मेरे आत्मा की मृत्यु हो जाती, यदि भगवान् मेरी उपरोक्त महा - दुष्ट गतियों से असहाय आघात् पाकर भी मेरे बचाने के लिए संग्राम न करते।

पूजनीय भगवान की सेवा में एक पत्र में श्रीमती स.भ. जी लिखती है :-

पूजनीय भगवान! मैं आपके देवरूप के सम्बन्ध में बहुत अपराधिन हूँ। मैंने नाना समयों में अपनी एक व दूसरी सुख कर परन्तु अनुचित और हानिकारक रुचि के विरुद्ध आप से कुछ सुनकर और उस पर चोट खाकर आपके विरूद्ध बहुत घृणा अनुभव की है। आपके देवरूप के सम्बन्ध में अपने साधन करने छोड़ दिए। आपके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करके मैंने अपने आपको बहुत मैला, काला और पतित बनाया है। ऐसी अवस्था में पहुंच कर मैंने

स्वभावत: यह चाहा है कि मैं आपके दर्शन तक न करूं। इस समय आपके सम्बन्ध में और कई ऐसी घटनाओं के भिन्न एक घटना प्रबल रूप से मेरे सामने आ रही है और वह यह कि जब मैं बीमार होकर लाहौर आई, तब आपसे मिलने पर आपने मुझे कहा कि तुम खाने - पीने में संयम नहीं रखती हो। स्वाद - वासना के वशीभूत होकर स्वास्थ्य - नाशक चीजें खा लेती हो कि जो ठीक नहीं। आपका यह कहना यद्यपि सत्य था, तो भी मैं आपके इस कथन से चोट खाकर आपके प्रति घृणा भाव से भर गई और आपके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करनी आरम्भ की। इस अवस्था में मैं जितने दिन वहां रही, उनमें कई दिन तक मैंने आपका दर्शन तक करना न चाहती और कभी दूर से ही रस्मी - प्रणाम कर लिया। अब आपकी देव - ज्योति में अपनी ऐसी महा अद्यम अवस्था को देखकर बहुत दुखी हूँ।

अपने एक कर्मचारी के विषय में पूजनीय भगवान लिखते हैं ..... कई नीच भावों का दास होने के भिन्न पिछले 18 वर्षों में यह जन अपने मान - बड़ाई - विषयक - वासना के दासत्व से भी इतना मुक्त न हो सका कि वह मेरे मुख से अपने किसी दोष व अपराध के विषय में कुछ सुनकर व उपदेश पाकर मुझे ऐसे समय में उल्ट देखने और मेरा अपमान करने और मुझे भयानक से भयानक आघात् और कष्ट पहुंचाने के पापों से रोक सकता। ऐसी महा नीच अवस्था रख कर भी वह अनेक बार अपने आप को, अपने नीच घमण्ड के कारण देवात्मा से भी श्रेष्ठ अस्तित्व समझता है।

भगवान् की सेवा में एक और जन लिखते हैं - मैं अपनी अन्धता के कारण अपनी उल्टी - गति को सीधी और आप को जो मेरी सचमुच की उल्टी - गति को मुझ पर उल्टी ही गति प्रकाश करते थे, गला पर और अपने आप को सही समझता था और हकीकत में आपके उस महान उच्च - कारज के लिए हानिकारक होकर भी अपने आप को उसकी उन्नति करने वाला अनुभव करता था। मेरी उस अन्धता के समय जब आप अपने हित - भाव से परिचालित होकर मुझ पर उन विनाशकारी गतियों को प्रकट करते और उनसे मुझे मोड़ने का यत्न करते, तब मुझे आप जहर की तरह मालूम होते थे, और मेरा दिल चाहता था कि मैं आप का मुंह तक न देखूं।

उपरोक्त दो तीन अवतरण ऐसे आत्माओं के हैं कि जो वर्षों भगवान् के मिशन में काम करते रहे। देव स्त्रोत और देव आरती का गान करते रहे। दूसरों के सामने भगवान देवात्मा की महिमा का बखान करते रहे। परन्तु अनेक बार अपने ही पूजनीय सत्गुरू से अपनी ही किसी नीच गति के विरूद्ध कोई बात सुन कर अपने ही अहं - अनुराग पर चोट खाकर अपने सत्गुरू हो ही घृणा करने के लिए मजबूर होते रहे।

इस विषय में भगवान की नीचे लिखी हुई पंक्तियां ध्यान से पढ़ने योग्य है :- "एक - एक सेवक के किसी अपराध व उसकी किसी हीनता के दिखाने के निमित मैंने जिस - जिस प्रकार का महा - संग्राम और परिश्रम किया है, एक - एक समय घण्टों तक नाना विधियों से उसकी किसी बुरी छवि के दिखाने के निमित अपनी अति मूल्यवान शारीरिक और मानसिक - शक्तियां को खर्च किया है और इस के उल्ट उसमें किसी उच्च - परिवर्तन को न देख कर और उसे अपने से बागी बनता व फटता जाता व इससे भी बढ़कर अपने अनुचित बचाव के

लिए किसी असत्य और मेरे लिए अत्यन्त अपमान-मूलक क्रिया का साथ देता देखकर और अपने अतिशय और अमूल्य परिश्रम की वृथा जाता पाकर मैंने अपने हृदय को टुकड़े-टुकड़े और अपनी सेहत को नष्ट करने वाला। जितना और जिस प्रकार का कष्ट पाया है, उसे अनुभव करना तो कहीं रहा, कोई और जन बुद्धि के द्वारा भी उसका कुछ अनुमान नहीं कर सकता।"

हमारा Ego (अंह) हमें इस अवस्था में नहीं रहने देता कि हम किसी से अपने विरूद्ध कुछ सुन सकें और उस को धन्यवाद दे सकें। जिसको पद और सत्ता मिल जाती है, साधारणत: उसका Ego (अंह) इतना बढ़ जाता है कि वह मस्त हाथी की तरह अपने विरोधियों को कीड़े-मकोड़ों की तरह कुचल डालने की चेष्टा करता है। मैं शत-प्रतिशत ठीक, मेरे विरोधी शत-प्रतिशत गल्त! कहता है।

मंजिल को पाने के लिए सपने देखना जरूरी है।

विकेंद्रीकरण के इस युग में सपना ही वह कुंजी है, जो हर एक को बांधे रखती है।

सभी सफल लीड्र्स के पास उस लक्ष्य का सपना होता है, जिसे वे हासिल करना चाहते हैं। यह सपना उनके हर प्रयास और शक्ति के पीछे की ऊर्जा बन जाता है, जो उन्हें सभी समस्याओं से सफलतापूर्वक निकालकर आगे ले जाता है। जब लीडर के पास सपना होता है, तो वह एक मिशन पर होता है। लक्ष्य पूरा करने के लिए घंटों मेहनत की जाती है। व्यक्तिगत अधिकार दरकिनार कर दिए जाते हैं, क्योंकि हिस्सों से अधिक महत्त्वपूर्ण होती है संपूर्ण टीम। समय को पंख लग जाते हैं, मनोबल शिखर पर होता है, असामान्य उपलब्धि की कहानियां जन्म लेती है और प्रतिबद्धता मूल सिद्धांत होती है। क्यों? लीडर के पास एक सपना होता है। एक बार हेलन केलर से पूछा गया, 'अंधे पैछा होने से भी बुरी बात क्या होगी?' उनका जवाब था, 'आँखें होने के बाद भी सपने न देखना।' यह दुखद है कि बहुत से लोग लीडर के पद पर है, परंतु उनके पास उस संगठन के लिए कोई सपना नहीं है, जिसका वे नेतृत्व कर रहे हैं। सभी महान लीडरों के पास दो चीजें अवश्य होती हैं-वे जानते हैं कि वे कहां जा रहे हैं और साथ ही दूसरों को अपने पीछे आने के लिए राजी करने में समर्थ होते हैं।

अपने संगठन के लिए लक्ष्य तैयार करने पर इतना जोर क्यों दिया जाता है? इसके दो कारण है-पहला, सपना संगठन की पहचान बन जाता है, उसका विजय उद्घोष बन जाता है। प्रतियोगिता से भरे बाजार में यह स्पष्ट रूप से कहता है कि ग्राहकों का ध्यान खींचने के लिए हल्ला मचा रही आवाजों में आपका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह आपके अस्तित्व का असली कारण है। दूसरी बात सपना नियंत्रण का नया साधन बन जाता है और उस मैन्युअल का रूप ले लेता है जिससे कोई काम शुरू करने में बाधा होती है। विकेंद्रीकरण के इस युग में सपना ही वह कुंजी है, जो हर एक को बांधे रखती है। लोग किसी सपने के पीछे नहीं चलते, वे उस लीडर के पीछे चलते हैं, जिसके पास एक सपना होता है और साथ ही उस सपने को अच्छी तरह से संप्रेषित करने की योग्यता होती है।

दृड़ निश्चय

साधारणत: आज के युग में जब नया वर्ष आता है, उस समय विशेष रूप से कुछ निश्चय किए जाते हैं, जिसको पढ़े लिखे लोग नये वर्ष के प्रस्ताव अर्थात् New Year Resolution कहते हैं।

बहुत से जन आने वाले वर्ष में कोई नशा छोड़ने का, कोई मांसाहार छोड़ने का, कोई अपने कारोबार वा पढ़ाई में बहुत मेहनत करने का कोई अपने गुस्से पर काबू पाने का आदि - आदि के Resolution करते हैं, परन्तु सधारणत: यह निश्चय कुछ दिनों वा घण्टों तक ही सीमित हो जाते हैं।

मोटे तौर पर तो इसमें मनुष्य के सुख प्राप्त करने की मूल प्रकृति ही बाधा बनती है। अधिकतर हम वही निश्चय करते हैं कि जिन बातों में हमें सुख मिलता है, परन्तु वह सुख हमारे लिए हानिकारक है। परन्तु सुख का अनुराग जो हमने अन्दर इतनी देर से पाला होता है, वह अपनी तृप्ति चाहता है, जिसके आगे हम परास्त हो जाते हैं। यह सुख चाहे खाने पीने के हो, आराम परस्ती के हों चाहे सत्ता, प्रभुत्व के हों चाहे कोई और।

सर्वप्रथम जब हम कोई भी, किसी समय भी अपनी भलाई के लिए निश्चय करते हैं, तो उसको अपनी कुर्बानी न समझकर अपने को सुधारने का अवसर समझें उसको करने से क्या हानियां हैं, और उसको छोड़ने के क्या लाभ हैं, वह तस्वीर साफ होनी चाहिए। अगर लाभों को गिनते रहेंगे और हानियों को याद करते रहेंगे तो अपने निश्चय पर अडिग रहने में सफलता में सहायता मिलेगी। उदाहरणत: नशे की हानियां लिखें, सेहत की बर्बादी, पैसे, इज्जत की बर्बादी, समय की बर्बादी तो आपको उसे छोड़ने में बल मिलेगा। यदि कोई विद्यार्थी निश्चय करता है, तो उसे यह तस्वीर साफ हो कि पढ़ाई में मेहनत करने से वह क्या बन सकता है, और मेहनत न करने से वह कहां रह जाएगा। यकि वह प्रतिदिन यदि करे तो वह अवश्य मेहनत करने में सफल होगा। थोड़ा सा अपना कार्यक्रम बदलना पड़ेगा, परन्तु ऐसा करके उसे बेहद सन्तुष्टि मिलेगी।

खाने में यदि हम गलत चीजें खाकर अपनी बिमारियां बढ़ा रहे हैं, तो भूखे नहीं रहना, थोड़ा सा परिवर्तन करके आप स्वास्थ्य रह सकते हैं। थोड़ा घी, मीठा कम करके, कुछ फलों और सब्जियों के प्रयोग बढ़ाकर आप स्वादिष्ट भोजन भी खाएंगे और सन्तुलत भी खाएंगे। कई ऐसे जन हैं जो खाने के बाद यही कहते रहते हैं, जंक फूड खा लिया, खाना नहीं चाहिए था नतीजा रोज़ाना पेट की समस्याओं से जूझते हैं।

कई जन यह सोचते हैं कि नशा, सिगरेट अधिक खाना और स्वादिष्ट खाना ही तुम्हें खुशी देता है, नहीं तो जिन्दगी में मजा ही क्या रह जाता है। पर क्या यह सचमुच मजेदार जिन्दगी रहती है?

जो भोजन अधिक तेलिये, मीठा युक्त और अधिक कैलरीज़ वाला है, वह हमारे खून के प्रवाह को रोकता है। सिगरेट के अन्दर की निकोटीन जहर बनकर हमारे गले और फेफड़ों को निष्क्रिय करती जाती है। छुट्टियों में मजा ही इसमें समझा जाता है कि खूब खाओ पीओ और मौज मस्ती करो और बाद में शरीर निष्क्रिय हो जाता है और कई अंगो में ऑक्सीजन की कमी होने से रोग ग्रस्त हो जाता है।

केवल सिगरेट, छोड़ने से और कुछ व्यायाम नियमित रूप से करने से शरीर में अभूतपूर्व तबदीली दिखाई देने लगती है। दिमाग को खून का प्रवाह बढ़ जाता है, तुम्हारी सोच शक्ति अधिक काम करने लगती है। शारीरिक क्षमता बढ़ जाती है। यही नहीं ऐसे Resolution करके आपकी उमर बढ़ती है, बल्कि बेहतर किसम की जिन्दगी जी सकते हो। यह लाभ यदि याद रखे जाएं, तो आप अपने निश्चय पर डटे रह सकते हैं।

अब वास्तव में यह गल्तफहमी आमतौर पर होती है कि आप जब ऐसे निश्चय करते हो, तो आप अपनी खुशी को ताक पर रखकर आपके लिए जो अच्छा है, वह करना चाहते हो। परन्तु आपकी सेहत अच्छी होने से, मेहनत करके कुछ बनने वा धन कमाने से आपको सच्ची खुशी नहीं मिलती? सेहत चुनने से बिमारियों के दुख जाएंगे। यदि आप सिंगर बनना चाहते, पिआनो बजाने में दक्ष होना चाहते हैं, तो कड़ी मेहनत के दुख को झेलकर ही आप सफल कलाकार बन पाएंगे। आपका Resolution कि अच्छा Singer बनूं या पियानो बजाने वाला बनूं, मेहनत से पूरा होगा। जब सफलता मिलती है, तो आपकी सब निराशाएं भाग जाती हैं। आजकल निराशा के मरीज बढ़ रहे हैं, उसका सब से बड़ा कारण कुछ पाने की इच्छा तो है परन्तु उसके लिए संग्राम की कमी है।

कुछ लोग सोचते हैं कि नैतिकता की जिन्दगी, अध्यात्मिक जिन्दगी तो बहुत Boring होती है। परन्तु क्या हानिकारक चीजें छोड़कर सेहत प्राप्त करना Fun नहीं? गुस्सा छोड़कर दूसरों को खुशी देना Fun नहीं? नैतिकता यही है कि हम हर क्षेत्र में अपने व्यवहार को अपने भले वा दूसरों के भले के लिए Change करें। उसके बाद ही सच्ची खुशी आरम्भ होती है।

दृढ़ निश्चय करके जिन्दगी की धारा को बदलना सच्ची खुशीयों से भर देता है। एक नशा छोड़कर ही देखें कि एक 2 जन छलांगे लगाने लगता है। कितना आत्म विश्वास उसमें आ जाता है।

तो हम क्यों न नशे छोड़ने, अच्छी पुस्तकें पढ़ने निन्दा चुगली से बचने, व्ययाम करने, दूसरों के लिए दिन में कम से कम एक काम अवश्य करने, कोई पशुओं, पौधों, बिमारों की सेवा करने अपने व्यवहार को मर्यादित रखने का निश्चय करें इससे मन को शान्ति भी मिलेगी और नेक बनने की राह खुलती जाएगी। अपने से निकल कर दूसरों को खुशी देने से ही सच्ची खुशी प्राप्त होती है।

सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

अंधाविश्वासी हैं महामहिम प्रतिभा पाटिल

राष्ट्रपति देश का मुखिया होता है और जब वही अंधविश्वास के सागर में डूबकी लगाए तो देश की नैय्या कौन पार लगाएगा? हम यहां बात कर रहे हैं नवनिर्वाचित राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल की जो राष्ट्रपति चुने जाने से पहले अपने भविष्य को लेकर भारी चिंता में थी और इस के निवारण के लिए अपने पुश्तैनी ज्योतिषी के पास हाथ दिखाने व ब्रह्मकुमारी के आश्रम में आर्शीवाद लेने गई थी।

विश्वास के सब से बड़े लोकतांत्रिक देश भारत का मुखिया जब एक महिला चुनी जाती है तो यह देश के लिए गर्व की बात हो सकती है इसलिए भी कि हमारे देश और समाज को परंपराओं और अंध विश्वासों ने आज भी 18वीं सदी की तरह जकड़ा हुआ है, खासतौर से महिलाओं को जिन में पढ़ना लिखना और स्कूल जाना तो दूर, घर चौखट लांघना और अच्छे चेहरे पर से परदा हट जाना भी पुरानी परंपरा के खिलाफ माना जाता है। 21वीं सदी के भारत में ज्यादातर महिलाओं को आज भी चूल्हाचौका करने और बच्चे पैदा करने तक ही सीमित माना जाता है।

आज भी महिलाओं को हिकारत भरी नजरों से देखा जाता है और पुरुषों द्वारा उनका शोषण होता है। पर इन तमाम बातों के बीच ही महिलाओं ने अपना स्थान भी बनाया है। इस विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में महिलाएं अंतरिक्ष में जा रही हैं, पुरुषों के बीच काम कर वे अपने बुद्धिकौशल का लोहा मनवा रही हैं और देश का भविष्य तय कर रही हैं। लेकिन जब देश का मुखिया ही अंधविश्वास की गुत्थी में उलझ जाए और अपना भविष्य किसी ज्योतिषी से तय करवाए तो फिर तेजी से विकास कर रहे इस देश के भविष्य को दिशा कौन देगा?

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल राजस्थान के सीकर जिले के छोटी लोसल गांव की बहू हैं, उन के पति देवी सिंह शेखावत इसी गांव के मूल निवासी हैं पर वर्षों पहले देवीसिंह शेखावत के दादा जगत सिंह काम के सिलसिले में यहां से महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जा कर बस गए थे। इस के बावजूद सीकर के अपने गांव से उन का संबंध बना रहा और वे समय-समय पर सपरिवार यहां आते रहे हैं।

डूंगरपुर के एक पुराने मन्दिर के पुजारी पर इस परिवार का बहुत विश्वास है। पिछले साल देवीसिंह शेखावत के साथ प्रतिभा पाटिल भी वहां गई थी। उस पुजारी ने प्रतिभा को बताया था कि वह राज्यपाल से भी बड़ा पद प्राप्त करेंगी, इस बात का खुलासा प्रतिभा पाटिल ने उस समय किया जब वह मांउट आबू से गरमियों की छुट्टी बिता कर जयपुर लौटी थी।

उन्होंने एक टीवी चैनल के साथ बातचीत में यह बताया कि ब्रह्मकुमारी विश्व आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की प्रमुख हृदय मोहिनी (दादी जी) के साथ उन की एक मुलाकात हुई थी जिस में ब्रह्मकुमारी के संस्थापक और दिवंगत आध्यात्मिक गुरू दादा लेखराज (बाबा) से उन की बातचीत हुई। उस मुलाकात के बारे में वह आगे बताती हुई कहती हैं कि मुझे तब एक बहुत ही सुखद अनुभव हुआ जब दादी जी के शरीर में बाबा आए। बाबा ने कहा कि तुम्हें एक बड़ी जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यह ब्यान प्रतिभा पाटिल ने तब दिया था जब वह राष्ट्रपति नहीं थी लेकिन राज्यपाल तो थी, जब एक पढ़ी लिखी महिला, वह भी किसी प्रदेश की

मुखिया हो, इस तरह सार्वजनिक ब्यान दे कर किसी मृत व्यक्ति से बात करने की बात कहे तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। यही बात यदि कोई सामान्य व्यक्ति कहता तो क्या उसे मानसिक रूप से अस्वस्थ घोषित नहीं कर दिया जाता। आत्मा और परमात्मा को मानने वाले देश के प्रमुख पर इस देश की जनता आखिर कैसे विश्वास कर सकती है।

सीकर के लोगों का कहना है कि प्रतिभा पाटिल एक बेहद धार्मिक महिला हैं और यहां के बड़े-बड़े धर्म स्थलों पर अकसर आती रहती हैं। साल पहले प्रतिभा पाटिल ने ससुराल स्थित करणी माता के मन्दिर में जागरण भी करवाया था। जाहिर है भक्तिभाव के कार्यों में प्रतिभा जी जो धन खर्च करती हैं वह हजारों नहीं लाखों में होता होगा। इस रकम को वह बेरोजगारी से जूझ रहे इस देश के किसी बेरोजगार का रोजगार के साधन मुहैया करा कर या किसी गरीब लड़की की शिक्षा पर खर्च कर एक रचनात्मक काम कर सकती थी।

यही नहीं, प्रतिभा पाटिल के राष्ट्रपति पद की शपथ लेने का समय भी एक पंडित ने पंचांग देख कर बताया था। क्या यह उचित है कि वह अपना हर काम पंडित से मुहूर्त निकलवा कर करें। क्या कारगिल पर दुश्मनों के आक्रमण का जवाब मुहूर्त निकलवा कर दिया गया था? यदि इस के लिए भी मुहूर्त निकलवाया गया होता तो शायद आज कारगिल पर पाकिस्तान का झंडा लहरा रहा होता।

राष्ट्रपति पद के लिए एक ऐसे धार्मिक, परंपरावादी, अंधविश्वासी उम्मीदवार का चुनने के लिए क्या वे जन प्रतिनिधि दोषी नहीं हैं जिन्होंने इस चुनाव में अपना मत दिया था और आपसी सहमति न बन पाने पर एक ऐसी महिला को बतौर राष्ट्रपति चुन कर देश के सर्वोच्च पद पर बैठा दिया था जो ज्योतिष, मुहूर्त और आत्मा आदि पर विश्वास रखती है।

प्रतिभा पाटिल धार्मिक हैं, यह उन का निजी मामला हो सकता है, लेकिन अब वह जिस पद पर बैठी हैं वह एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का सर्वोच्च पद है, और इस पद पर बैठने वाले का जीवन सार्वजनिक होता है, यह बात उन्हें ध्यान में रखनी होगी।

अपने से ज्यादा पंडित, पुजारी और बाबा पर भरोसा करने वाले लोग मठ या मन्दिर का संचालन तो ज्यादा बेहतर ढंग से कर सकते हैं लेकिन देश का संचालन नहीं।

सरित सितम्बर, 2007



उलझे हुए सवाल को, इक जवाब चाहिए,
क्या खोया, क्या पाया, अब हिसाब चाहिए।

सब्र का बांध टूट गया, बिखरने लगे किनारे,
जो समेट ले सैलाब को, अब वो हाथ चाहिए।

झुकते गए इतना कि हस्ती ही मिट गई,
फिर से जीने की उम्मीद की सौगात चाहिए।

अमन के नाम पर चलें, सियासत के दांव पेंच
ऐसे सफेदपोशों से अब निजात चाहिए।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

ईमानदार व्यक्ति का जीवन खुली किताब होता है।

हम जो कहते, करते और सोचते हैं, अखंडता या ईमानदारी उसे एक पूर्ण व्यक्ति में ढालती है, ताकि इनमें से कोई भी एक-दूसरे से अलग न हो।

ईमानदार व्यक्ति 'पूर्ण' व्यक्ति होते हैं। उनकी एक निष्ठता से उन्हें पहचाना जा सकता है। ईमानदार व्यक्ति का जीवन खुली किताब की तरह होता है। वी. गिल्बर्ट बीयर्स कहते है, 'ईमानदार व्यक्ति वह होता है, जिसने जीवन मूल्यों का एक ऐसा सिस्टम बना लिया है जिसके आधार पर पूरे जीवन का मूल्यांकन होता है।

ईमानदारी इस बात से तय नहीं होती कि हम क्या करते है। ईमानदारी तो उस बात से तय होती है, जो हम होते है। परन्तु हम कौन है, यह हमारे कार्यों से ही निर्धारित होता है। हमारे जीवन मूल्यों का सिस्टम हमारा इतना अभिन्न हिस्सा होता है कि हम इस अपने से अलग नहीं कर सकते। यह वह मार्गदर्शक सिस्टम बन जाता है, जो हमारा मार्गदर्शन करता है। हम सभी के सामने विरोधाभासी इच्छाएं आती है। चाहे कोई कितना भी 'आध्यात्मिक' क्यों न हो, वह इस युद्ध से बच नहीं सकता।

हम कर रोज ऐसी स्थितियों से संघर्ष करते है जिसमें हमें अपने सामने मौजूद दो विकल्पों में से एक को चुनना होता है - वह जो हम करना चाहते है और वह जो हमें करना चाहिए। ईमानदारी इन तनावों को सुलझाने के लिए आधारभूत नियम निर्धारित करती है। यह तय करती है कि हम कौन है और संघर्ष की स्थिति आने पर हमारी प्रतिक्रिया क्या होगी। हम जो कहते, करते और सोचते है, अखंडता या ईमानदारी उसे एक पूर्ण व्यक्ति में ढालती है, ताकि इनमें से कोई भी एक-दूसरे से अलग न हो। ईमानदारी हमें यह पूर्व निर्धारित करने की अनुमति देती है कि हम क्या होंगे, फिर चाहे परिस्थितियां, शामिल होने वाले लोग या हमारी परीक्षा के स्थान कैसे भी हों। यह एक सुखी व्यक्ति और एक विभाजित मानसिकता वाले व्यक्ति के बीच के अंतर का मुख्य बिंदु भी है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts